No of Questions : 30

No of Pages : 5

नामांक

माध्यमिक परीक्षा, 2019

हिन्दी

मॉडल पेपर 5

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

सन् 1908 ई. की बात है। दिसंबर का आखरी या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो–चार दिन पूर्व कुछ बूँदा–बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ में झरबेरी के बेर तोड़–तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने ज़ोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कोन–सा कसूर बन पड़ा। डरते–डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भय दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा– **इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेज़ी से जाना, जिससे शाम की डाक में चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी ज़रूरी हैं।**

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

2. लेखक को घर किसने बुलाया था? 1

3. लेखक को घर जाने में किस का डर सता रहा था? 2

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मानव के सुख दुखों में नित्य पनपकर

www.rbse.online

इनसे ऊपर, जीवन में ही बहता हूँ।
मैं क्षण के चपल विहंगों का गायन हूँ
मैं सतत–समय–धारा सपना प्यारा।
मैं देख रहा हूँ कितना मिथ्या भौतिक
पतनोन्नति का सत्य, अरे बेचारा।
मैं चिन्तक हूँ, शाश्वत का कवि हूँ, भाई
मैं ईमान गरीब जनों का प्यारा
मैं श्रद्धा हूँ, आकुल की करूण रूलाई
मैं उत्साह अखण्ड, अडिग तरूणों का न्यारा।

4. कवि के अनुसार वास्तविक जीवन है? 1

5. पीड़ित की करूण रूलाई को कहाँ अभिव्यक्ति मिलती है? 1

6. युवाओं में अडिग उत्साह का संचार कौन करता है? 2

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. दहेज–प्रथा
   (क) प्रस्तावना
   (ख) दहेज–प्रथा का अर्थ
   (ग) नारी का सम्मान
   (घ) दिखावे की भावना
   (ङ) समस्या का समाधान
   (च) नारी की आर्थिक स्वतंत्रता
   (छ) निष्कर्ष
2. बढ़ती हुई महँगाई
   (क) प्रस्तावना
   (ख) जनसंख्या में वृद्धि
   (ग) उत्पादन में कमी
   (घ) भ्रष्ट वितरण–प्रणाली
   (ङ) जमाखोरी
   (च) युद्ध के कारण
   (छ) महँगाई के दुष्परिणाम
   (ज) उपसंहार
3. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण
   (क) प्रस्तावना
   (ख) वृक्ष संरक्षण
   (ग) नदी–पर्वत संरक्षण
   (घ) उपसंहार

4. प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त
   (क) प्रस्तावना
   (ख) भारत में ऋतुएँ
   (ग) ऋतुराज कहलाने का कारण
   (घ) प्राकृतिक वातावरण
   (ङ) उपसंहार

8. कल्पना कीजिए कि आप बाल भारती शिक्षा विद्यापीठ, जयपुर के छात्र गौरव भारतीय हैं। विद्यालय में भौतिक सुविधाओं की कमी का उल्लेख करते हुए उसकी पूर्ति हेतु प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 4

अथवा

8. स्वयं को उदयपुर निवासी साक्षी मानते हुए अपने जिला पुलिस अधीक्षक को सुरक्षा संबंधी पत्र लिखिए, जिसमें आपके मोहल्ले में बाहरी लोगों द्वारा की जा रही सन्देहास्पद गतिविधियों का उल्लेख हो। 4

खण्ड–स

9. **अर्श तैर रहा है।** वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

10. वाच्य किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं? 3

11. कर्मधारय समास की सोदाहरण परिभाषा लिखिए। 2

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$
    1. मैंने तेरे को बहुत समझाया।
    2. तुम तुम्हारा काम करो।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$
    1. प्राणांत होना
    2. जान हथेली पर लेकर चलना

14. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि–किंकिनि में धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बन–माल सुहाई।।
माथे किरीट, बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुख चंद जुन्हाई।
जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्रीब्रज–दूलह देव–सहाई।।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

धार में धाय धँसी निरधार ह्वै, जाय फँसी, उकसीं न अबेरी।
री अंगराय गिरीं गहरी, गहि, फेरे फिरीं और घिरी नहीं घेरी।।

www.rbse.online

देव कछू अपनो बस ना, रस–लालच लाल चितै भयीं चेरी।
बेगि ही बूड़ि गयी पँखियाँ, अखियाँ मधु की मखियाँ भयीं मेरी।।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन–सी भाषा बोलती थीं? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के हैं, उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों उपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं। जिन पंडितों ने **गाथा–सप्तशती, सेतुबंध–महाकाव्य** और **कुमारपाल चरित** आदि ग्रंथ प्राकृत में बनाए हैं, वे यदि अपढ़ और गँवार थे तो हिन्दी के प्रसिद्ध से भी प्रसिद्ध अखबार का सम्पादक इस जमाने में अपढ़ और गँवार कहा जा सकता है, क्योंकि वह अपने जमाने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है।

17. संकलित अंश के आधार पर वाणी के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 6

अथवा

17. **कृपाराम खिड़िया कृत सोरठों** में कवि की विद्वता, बहुज्ञता एवं अनुभव की व्यापकता प्रकट होती है। संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 6

18. **भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है।** पाठ के आलोक में इस कथन की व्याख्या कीजिए। 6

अथवा

18. **आखिरी चट्टान** के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालिए। 6

19. **लक्ष्मण–परशुराम संवाद** प्रसंग के आधार पर परशुराम के चरित्र की किन्हीं दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 2

20. **विनम्र और कोमल स्वभाव वाला व्यक्ति सहज ही दूसरों के मध्य अपनी पहचान बना लेता है।** संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

21. **उषा की लाली** कविता का शिल्प–सौंदर्य लिखिए। 2

22. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए क्या–क्या तर्क दिये? 2

23. मन बहुत बैचेन था .... लग रहा था कि वहाँ से तुरन्त लौट जाना पड़ेगा। स्पष्ट कीजिए। 2

24. **एकै मारग तें सब आया** इत्यादि कथन से सन्त पीपा ने क्या संदेश व्यक्त किया? 2

25. कवि ने किस प्रकार के नगर की अपेक्षा निर्जन वन में रहना अच्छा बताया है? 1

26. **जन्मजात प्रवृत्तियों में बदलाव असंभव है।** संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 1

27. कन्याकुमारी में किन तीन सागरों का संगम होता है? 1

28. नीत्से ने ईर्ष्यालु व्यक्ति को क्या कहकर उनकी उपेक्षा की है? 1

29. कवि कृपाराम खिड़िया का साहित्यिक परिचय संक्षेप में लिखिए। 4

30. मोहन राकेश के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दीजिए। 4

□□□□□□□

www.rbse.online

राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019
10वीं कक्षा
हिंदी
मॉडल पेपर 5

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

सन् 1908 ई. की बात है। दिसंबर का आखरी या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो-चार दिन पूर्व कुछ बूँदा-बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ में झरबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने ज़ोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कोन-सा कसूर बन पड़ा। डरते-डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भय दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा- **इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेज़ी से जाना, जिससे शाम की डाक में चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी ज़रूरी हैं।**

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :

गद्यांश का उचित शीर्षक- **मार का डर।**

2. लेखक को घर किसने बुलाया था? 1

उत्तर :

लेखक को घर उनके बड़े भाई ने बुलाया था।

3. लेखक को घर जाने में किस का डर सता रहा था? 2

उत्तर :

लेखक को बड़े भाई की मार का डर सता रहा था।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

मानव के सुख दुखों में नित्य पनपकर
इनसे ऊपर, जीवन में ही बहता हूँ।
मैं क्षण के चपल विहंगों का गायन हूँ
मैं सतत-समय-धारा सपना प्यारा।
मैं देख रहा हूँ कितना मिथ्या भौतिक
पतनोन्नति का सत्य, अरे बेचारा।
मैं चिन्तक हूँ, शाश्वत का कवि हूँ, भाई
मैं ईमान गरीब जनों का प्यारा
मैं श्रद्धा हूँ, आकुल की करूण रुलाई
मैं उत्साह अखण्ड, अडिग तरूणों का न्यारा।

4. कवि के अनुसार वास्तविक जीवन है? 1

उत्तर :

कवि के अनुसार वास्तविक जीवन सुख-दुःख से ऊपर उठने में हैं।

5. पीड़ित की करूण रुलाई को कहाँ अभिव्यक्ति मिलती है? 1

उत्तर :

पीड़ित की करूण रुलाई को सजग कवि की वाणी में अभिव्यक्ति मिलती है।

6. युवाओं में अडिग उत्साह का संचार कौन करता है? 2

उत्तर :

युवाओं में अडिग उत्साह का संचार कवि करता है।

खण्ड-ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. दहेज–प्रथा
   (क) प्रस्तावना
   (ख) दहेज–प्रथा का अर्थ
   (ग) नारी का सम्मान
   (घ) दिखावे की भावना
   (ङ) समस्या का समाधान
   (च) नारी की आर्थिक स्वतंत्रता
   (छ) निष्कर्ष
2. बढ़ती हुई महँगाई
   (क) प्रस्तावना
   (ख) जनसंख्या में वृद्धि
   (ग) उत्पादन में कमी
   (घ) भ्रष्ट वितरण–प्रणाली
   (ङ) जमाखोरी
   (च) युद्ध के कारण
   (छ) महँगाई के दुष्परिणाम
   (ज) उपसंहार
3. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण
   (क) प्रस्तावना
   (ख) वृक्ष संरक्षण
   (ग) नदी–पर्वत संरक्षण
   (घ) उपसंहार
4. प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त
   (क) प्रस्तावना
   (ख) भारत में ऋतुएँ
   (ग) ऋतुराज कहलाने का कारण
   (घ) प्राकृतिक वातावरण
   (ङ) उपसंहार

उत्तर :

1. दहेज–प्रथा

(क) **प्रस्तावना –** भारतीय समाज में अनेक प्रकार की बुराईयाँ व्याप्त हैं। इन पारम्परिक रूढ़ियों और कुरीतियों के कारण आज भी विश्व में हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। जाति–पाति, छुआछूत, बाल–विवाह, दहेज–प्रथा आदि कुरीतियाँ हमारे विकास के मार्ग में बाधा बन रही हैं। दहेज–प्रथा के कारण न जाने कितनी युवतियाँ यौवनकाल में ही मृत्यु की शिकार हो जाती हैं।

(ख) **दहेज–प्रथा का अर्थ –** दहेज शब्द उर्दू के **जहेज** शब्द से बना है। इसका अर्थ है– सौगात। यह प्रथा कब शुरू हुई, यह कहना तो मुश्किल है, लेकिन वेदों में भी इस प्रथा की सूचना मिलती है। उस समय लड़की के माता–पिता अपनी बेटी को विवाह के अवसर पर घर चलाने के लिए कुछ सामान उपहार स्वरूप देते थे। इनमें चूल्हा, कुछ बर्तन, चारपाई, गाय, चावल तथा भोजन पकाने का सामान होता था। यह माता–पिता की ओर से एक प्रकार का दान स्वरूप होता था।

(ग) **नारी का सम्मान –** प्राचीन भारत में नारी का समाज में पूरा मान–सम्मान होता था। संस्कृत भाषा में तो कहा भी गया है कि जिस समाज में नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। उस समय नारी अपनी योग्यता के अनुसार वर चुनती थी, फिर हमारा देश गुलाम हो गया। साथ ही नारी का अपमान होने लगा। इसी काल में दहेज को भी बढ़ावा मिलने लगा। आज तो कन्या विवाह माता–पिता के लिए कठिन समस्या बन गया है।

(घ) **दिखावे की भावना –** स्वतंत्रता के बाद देश में दहेज–प्रथा को बढ़ावा मिला है। अमीर अपनी बेटी के विवाह में बढ़–चढ़ कर दहेज देते हैं। देखा–देखी गरीब लोग भी कर्ज लेकर अपनी बेटी के लिए अच्छा सामान खरीदने की कोशिश करते हैं। काले धन से इस समस्या को और अधिक बढ़ावा मिला है। उधर दहेज के लालची लोग अपनी बहुओं को तंग करना शुरू कर देते हैं। न जाने कितनी लड़कियाँ दहेज कम लाने के कारण जलाकर मार दी जाती हैं। कितनी लड़कियाँ तो कुँवारी ही रह जाती हैं।

(ङ) **समस्या का समाधान –** दहेज–प्रथा समाप्त करने के लिए सरकार ने 1961 ई. में कानून भी बनाया। इसके बाद कुछ और कानून भी बने, लेकिन कोई अच्छे परिणाम सामने नहीं आए। जब तक युवक–युवतियों में जागृति पैदा नहीं होती, तब तक यह प्रथा समाप्त नहीं हो सकती। दहेज को समाप्त करने के लिए सामाजिक चेतना का जाग्रत होना भी आवश्यक है। सरकार को भी इसके लिए कठोर कदम उठाने होंगे। युवतियों को भी दहेज के लालची युवकों से शादी नहीं करनी चाहिए।

(च) **नारी की आर्थिक स्वतंत्रता –** इस प्रथा को जड़ से समाप्त करने के लिए नारी का आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होना जरूरी है। यदि कोई युवती अपने पैरों पर खड़ी है तो उसका पति या सास–ससुर उसे दहेज के लिए तंग नहीं कर सकते। यदि दिनभर घर में नहीं रहेगी, सास–ससुर उसे तंग नहीं कर पाएंगे। यह डर उनके मन में हमेशा व्याप्त रहेगा कि उनकी बहू कुछ कमा कर लाती है।

(छ) **निष्कर्ष –** निश्चय ही दहेज–प्रथा एक गंभीर समस्या है। यह हमारे सामाजिक और आर्थिक विकास के मार्ग में बाधा का कार्य करती है। यह हमारे पिछड़ेपन का प्रतीक ही नहीं, बल्कि यह समाज का कोढ़ है। यदि भारत का प्रत्येक नागरिक यह प्रतिज्ञा करे कि वह न तो दहेज लेगा और न देगा तो इस समस्या को मूल नष्ट किया जा सकता है।

2. बढ़ती हुई महँगाई

(क) **प्रस्तावना –** वर्तमान में संसार के सामने अनेक समस्याएँ हैं। महँगाई उनमें से एक गंभीर समस्या है। महँगाई के कारण आज समाज के निम्न वर्ग तथा मध्य वर्ग की दशा अत्यधिक शोचनीय होती जा रही है। हर वस्तु की कीमत में वृद्धि हो रही है। सरकार महँगाई को रोकने के लिए अनेक घोषणाएँ कर चुकी है, किंतु वह इसे रोकने में पूर्णतः सफल नहीं रही। महँगाई का बुरा प्रभाव बच्चे से लेकर बूढ़े व्यक्ति तक पड़ रहा है। महँगाई के विभिन्न कारण हैं।

(ख) **जनसंख्या में वृद्धि –** महँगाई का प्रमुख कारण है– जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि। जनसंख्या में वृद्धि के कारण लोगों के खाने–पीने की वस्तुएँ कम पड़ जाती हैं, जबकि खरीदने वाले अधिक होते हैं। इसलिए उनकी कीमतों में वृद्धि आती है। यही दशा आवास और अन्य वस्तुओं की भी है।

(ग) **उत्पादन में कमी –** भारत एक कृषि–प्रधान देश है। यहाँ की कृषि वर्षा पर निर्भर करती है। यदि समय पर वर्षा नहीं होती तो सूखा पड़ जाने के कारण कृषि के उत्पादन में कमी आ जाती है, जिससे कारखानों में कच्चा माल नहीं पहुँच पाता। इस प्रकार कारखानों में

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

भी उत्पादन में कमी हो जाती है। जिससे वस्तुओं के मूल्य बढ़ने लगते है।

(घ) **भ्रष्ट वितरण–प्रणाली –** देश में अच्छी वितरण–प्रणाली न होने के कारण भी महँगाई निरंतर रूप से बढ़ रही है। कुछ लोग आवश्यकता से अधिक सामान खरीद लेते हैं, जबकि दूसरों के पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी वस्तुएँ नहीं होतीं। इस प्रकार दोषपूर्ण वितरण–प्रणाली के कारण भी महँगाई में निरंतर वृद्धि हुई है। यदि वस्तुओं की खरीद और वितरण विभाग के कर्मचारी ईमानदारी से काम करें तो कुछ सीमा तक इस समस्या को कम किया जा सकता है।

(ङ) **जमाखोरी –** उपज जब मण्डियों में आती है, तब अमीर व्यापारी अत्यधिक मात्रा में अनाज एवं अन्य वस्तुएँ खरीदकर अपने गोदाम भर लेता है और इस प्रकार बाजार में वस्तुओं की कमी हो जाती है। व्यापारी अपने गोदामों की वस्तुएँ तभी बेचता है जब उसे कई गुना अधिक मूल्य प्राप्त होता है।

(च) **युद्ध के कारण –** युद्धों के कारण भी महँगाई बढ़ती है। उदाहरणार्थ भारत को निरंतर कई युद्धों का सामना करना पड़ा, इसलिए यहाँ महँगाई भी निरन्तर बढ़ी है। विशेषकर बांग्लादेश को आजाद करवाने के संघर्ष का देश को भारी मूल्य चुकाना पड़ा। आज भी पाकिस्तानी उग्रवादियों की घुसपैठ के कारण हमारी सरकार के आर्थिक बोझ में निरंतर वृद्धि हो रही है।

(छ) **महँगाई के दुष्परिणाम –** कहा जा चुका है कि महँगाई का प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग पर पड़ता है। लोगों का जीवन–निर्वाह करना मुश्किल हो जाता है। लोगों का जीवन–स्तर गिर जाता है । बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। देश में विकास की योजनाओं में बाधा पड़ती है। आर्थिक विकास की गति में कमी होने के कारण समाज में जमाखोरी और भ्रष्टाचार को बढावा मिलता है।

(ज) **उपसंहार –** महँगाई की समस्या सम्पूर्ण विश्व के लिए एक गंभीर समस्या है। इसका प्रभाव समाज के प्रत्येक वर्ग पर पड़ता है। हम महँगाई पर काबू पाकर ही अपना और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। सरकार को चाहिए कि वह भ्रष्टाचार और जमाखोरी के विरुद्ध मजबूत कदम उठाए और ऐसे कार्यों में लगे लोगों को कड़ी सजा दे।

3. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण

(क) **प्रस्तावना** – परि+आवरण में संधि करने पर **पर्यावरण** शब्द बनता है। इस सृष्टि और धरती के सभी जीव–जन्तु, पेड़–पौधे, नदी–पर्वत, जलाशय एवं मानव आदि सभी की गतिविधियाँ इसमें सम्मिलित होती है। जब भूमि, जल एवं वायु आदि तत्वों में कुछ विकास आने लगता है या सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब पर्यावरण प्रदूषण का खतरा बढता है। वर्तमान में विभिन्न भौतिक कारणों से पर्यावरण प्रदूषण गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है। इसलिए इसका संरक्षण हम सभी का प्राथमिक कर्तव्य है।

(ख) **वृक्ष संरक्षण –** भारतीय संस्कृति में वृक्षों का विशेष महत्व है। पीपल, अशोक, शमी, आकड़ा–खेजड़ा आदि वृक्षों को देवताओं का अधिवास मानकर इनकी पूजा की जाती है। इसी कारण कई लोग वृक्षों की कटाई का विरोध करते हैं। चिपको आंदोलन तथा राजस्थान के विश्नोई समाज का वृक्ष–प्रेम प्रसिद्ध है। वृक्ष कार्बन–डाई–ऑक्साइड को ग्रहण कर स्वच्छ प्राण वायु का संचार करते हैं। ये धरती पर तापमान को नियंत्रित कर बादलों को वर्षा करने के लिए आकृष्ट करते हैं। वृक्षों से धरती का क्षरण रुक जाता है तथा इनमें हरा चारा, इमारती लकड़ी एवं ईंधन–कोयला आदि प्राप्त होते है। जंगली पशुओं की रक्षा भी वृक्षों से ही होती है। इस तरह वृक्ष पर्यावरण के रक्षक माने जाते हैं। इस बात का ध्यान रखकर भारत सरकार का वन–विभाग वृक्षों का संरक्षण–संवर्धन करने में तत्पर रहता है।

(ग) **नदी–पर्वत संरक्षण –** वृक्षों एवं वनों की तरह नदियों की स्वच्छता और पर्वतों की हरीतिमा का ध्यान रखना भी अनिवार्य है। लोग खनन या भूदोहन से वनों–पर्वतों को उजाड़ रहे हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। गंगा आदि नदियों का जल दूषित होने से अनेक हानियाँ हो रही हैं। पेयजल की कमी हो रही है, धरती की उर्वरा–शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही जलचर जन्तुओं की अनेक प्रजातियों का अस्तित्व धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है। इसलिए पर्वतों के साथ ही नदियों का संरक्षण जरूरी है। वैसे भी हम गंगा आदि नदियों की पूजा करते हैं, इन्हें मोक्ष देने वाली मानते हैं। अतः इनका संरक्षण हमारा पवित्र कर्तव्य बनता है।

(घ) **उपसंहार –** भारतीय संस्कृति में आरम्भ से ही वृक्षों, वनों, नदियों एवं पर्वतों को ईश्वर की विशेष रचना मानकर पूज्य बताया गया है। आज भी सरकार द्वारा इनके संरक्षण के विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं। गंगा आदि नदियों की शुद्धि तथा वनावलियों के प्रसार के कार्य चल रहे हैं, इन सब उपायों से पर्यावरण संरक्षण के जो प्रयास किये जा रहे हैं, उनमें हम सभी का सहयोग आवश्यक है।

4. प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त

(क) **प्रस्तावना –** भारत भूमि पर विधाता की विशेष कृपा–दृष्टि बनी हुई है, क्योंकि यहाँ पर समय की गति के साथ ऋतुओं का चक्र घूमता रहता है। इससे यहाँ प्राकृतिक परिवेश में निरन्तर परिवर्तन एवं गतिशीलता दिखाई देती है। पर्यावरणीय विकास की दृष्टि से भारत में ऋतु–परिवर्तन का अत्यधिक महत्व माना जाता है। इसमें भी वसन्त ऋतु का अपना विशिष्ट सौन्दर्य सभी को आनन्ददायी लगता है।

(ख) **भारत में ऋतुएँ –** भारत में एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं– वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर और हेमन्त। प्रत्येक ऋतु का समय दो माह होता है। जब सूर्य कर्क रेखा पर होता है, तब ग्रीष्म ऋतु पड़ती है। फिर सावन–भादों में वर्षा–ऋतु आती है और चारों ओर जल–वर्षण होता रहता है। सूर्य विषुवत् रेखा पर रहता है, तब शरद ऋतु का आगमन होता है, दीपावली के बाद शिशिर ऋतु प्रारम्भ होती है। इसमें कड़ाके की ठण्ड पड़ती है तथा पर्वतीय स्थलों पर बर्फ गिरती है। इसके बाद हेमन्त ऋतु आती है, इसमें वृक्षों–लताओं के पत्ते सूखकर झड़ने लगते हैं। सूर्य वापिस विषुवत् रेखा पर पहुँचते ही वसन्त ऋतु का आगमन होता है। इस प्रकार भारत में वर्षभर में छः ऋतुएँ बदल जाती हैं।

(ग) **ऋतुराज कहलाने का कारण –** प्रत्येक ऋतु का अपना अलग महत्व है, परन्तु वसन्त ऋतु का विशेष महत्व है। इस ऋतु में समस्त प्रकृति में सौन्दर्य एवं आनन्द छा जाता है। धरती का नवीन रूप सज जाता है, प्रकृति अपना श्रृंगार–सा करती है तथा समस्त प्राणियों के हृदय उमंग, उत्साह एवं मादकता उल्लास से भर जाते हैं। इस ऋतु का प्रारम्भ माघ शुक्ल पञ्चमी से होता है, होली का त्यौहार इसी ऋतु में पड़ता है। नये संवत्सर का प्रारम्भ भी इसी

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

से माना जाता है। इन सब कारणों से वसन्त को ऋतुराज अर्थात् ऋतुओं का राजा कहा जाता है। कवियों एवं साहित्यकारों ने इस ऋतु की विशेषकर प्रशंसा की है।

(घ) **प्राकृतिक वातावरण –** वसन्त ऋतु में सभी पेड़–पौधे नये पत्तों, कोंपलों, कलियों एवं पुष्पों से सज जाते हैं। शीतल, मन्द एवं सुगन्धित हवा चलती है। न गर्मी और न सर्दी रहती है। कोयल कूँकने एवं भौंरे गुंजार करने लगते हैं। होली, फाग एवं गणगौर का उत्सव किशोर–किशोरियों को आनन्दित करता है। सम्पूर्ण प्राकृतिक वातावरण अत्यधिक सुन्दर, मनमोहक और मादक बन जाता है। कवियों के कण्ठ से शृंगार रस झरने लगता है। दूर–दूर तक नवीन सौंदर्य एवं दर्शनीय सुषमा फैल जाती है।

(ङ) **उपसंहार –** भारत में वैसे सभी ऋतुओं का महत्व है, सभी उपयोगी हैं और समय–परिवर्तन के साथ प्राकृतिक परिवेश की शोभा बढ़ाती हैं। परन्तु सभी ऋतुओं में वसन्त का सौंदर्य सर्वो परि रहता है। इसी कारण से इसे ऋतुराज कहा जाता है। यह ऋतु कवियों, प्रकृति–प्रेमियों एवं भावुकजनों को अतिशय प्रिय लगती है।

8. कल्पना कीजिए कि आप बाल भारती शिक्षा विद्यापीठ, जयपुर के छात्र गौरव भारतीय हैं। विद्यालय में भौतिक सुविधाओं की कमी का उल्लेख करते हुए उसकी पूर्ति हेतु प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य जी,
बालभारती शिक्षा विद्यापीठ,
जयपुर।

विषय : विद्यालय में भौतिक सुविधाओं की कमी–पूर्ति हेतु प्रार्थना–पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे विद्यालय में शिक्षण की उत्तम व्यवस्था है, परन्तु भौतिक सुविधाओं की कमी के कारण विद्यार्थियों को विभिन्न असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है। सर्वप्रथम कक्षाओं में अपेक्षित फर्नीचर की कमी है, जिससे छात्रों को कक्षा में बैठने में असुविधा होती है, कुछ छात्रों को खड़ा रहना पड़ता है और वे पाठ से संबंधित नोट लेने में असमर्थ रहते हैं।

विद्यालय में पुस्तकालय और वाचनालय कक्ष नहीं है। पेशाबघर है, परन्तु उसमें सफाई की कोई नियमित व्यवस्था नहीं है। पेयजल की व्यवस्था भी ठीक नहीं है। टंकियों पर ढक्कन न होने से उनमें रखा पानी गन्दा होने के कारण पीने योग्य नहीं है। इसी प्रकार खेल का मैदान भी समतल नहीं है, उसमें कई जगह गड्ढे बन गए हैं। कम्प्यूटर कक्ष के अधिकांश कम्प्यूटर खराब पड़े हैं। इस तरह सभी सुविधाओं की ओर ध्यान न देने से अव्यवस्था बढ़ रही है। यह स्थिति किसी भी दृष्टि से विद्यालय एवं छात्रों के लिए हितकारी नहीं है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अतिशीघ्र भौतिक सुविधाओं की उपर्युक्त कमियों को सुधारा जाए। इसके लिए हम सभी छात्र आपके आभारी रहेंगे।

प्रार्थी।
गौरव भारतीय,
दिनांक : 07 दिसम्बर, 2018 कक्षा–10

अथवा

8. स्वयं को उदयपुर निवासी साक्षी मानते हुए अपने जिला पुलिस अधीक्षक को सुरक्षा संबंधी पत्र लिखिए, जिसमें आपके मोहल्ले में बाहरी लोगों द्वारा की जा रही सन्देहास्पद गतिविधियों का उल्लेख हो। 4

उत्तर :

प्रतिष्ठा में,
पुलिस अधीक्षक महोदय,
जिला– उदयपुर,

विषय : मोहल्ले में बाहरी लोगों द्वारा की जा रही संदेहास्पद गतिविधियों की रोकथाम के लिए।

मान्यवर,

भारत में, झीलों की नगरी के रूप में प्रसिद्ध उदयपुर शहर में कानून और व्यवस्था की स्थिति में निरन्तर खराब हो रही है तथा अराजकता बढ़ रही है।

हमारे मोहल्ले विजय पथ में इन दिनों गुंडागर्दी, महिलाओं व लड़कियों से छेड़छाड़, राहजनी, छीना–झपटी, चोरी और डकैती की घटनाओं में अत्यधिक वृद्धि हुई है और मोहल्ले में संदेहास्पद बाहरी लोगों की गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, जिससे इस क्षेत्र के लोगों में असुरक्षा, भय और आतंक की स्थिति बनी हुई है।

अतः आपसे अनुरोध है कि बाहर से आने वाले संदिग्ध व्यक्तियों पर कड़ी नजर रखी जाए तथा उनके द्वारा की जा रही समाज विरोधी गतिविधियों पर रोक लगाई जावे। मुझे विश्वास है कि आप हमारे मोहल्ले में बढ़ रही संदेहास्पद लोगों की गतिविधियों पर नियंत्रण करके इस क्षेत्र के लोगों को राहत पहुँचाने की कार्यवाही अतिशीघ्र करने की कृपा करेंगे।

धन्यवाद। विनीत
दिनांक : 25 नवम्बर, 2018 साक्षी
निवासी मोहल्ला विजय पथ
उदयपुर

खण्ड–स

9. **अर्श तैर रहा है।** वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी परिभाषा लिखिए। 2

उत्तर :

वाक्य में अकर्मक क्रिया है। **परिभाषा–** जिस क्रिया का कोई कर्म नहीं होता, अपितु उसका प्रभाव कर्ता पर ही पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

10. वाच्य किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं? 3

उत्तर :

वाच्य का अर्थ– क्रिया के जिस रूप से जब यह ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया के व्यापार का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है, तो उसे वाच्य कहा जाता है।

वाच्य के प्रकार– वाच्य के तीन भेद हैं

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

11. कर्मधारय समास की सोदाहरण परिभाषा लिखिए। 2

उत्तर :

कर्मधारय समास में पूर्व पद उत्तर पद का विशेषण या विशेष्य अथवा उपमान या उपमेय होता है। इस समास में कभी पहला पद, कभी दूसरा पद और कभी दोनों पद विशेषण होते हैं या कभी पहला पद, कभी दूसरा पद और कभी दोनों पर विशेष्य होते हैं। इसमें दोनों पद समान लिंग, वचन के और कर्ता कारक के होते हैं।

उदाहरण–

1. मोटा–ताजा (विशेषण+विशेषण)
2. चन्द्रमुख (उपमान+उपमेय)
3. पीताम्बर– पीत है जो अम्बर।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. मैंने तेरे को बहुत समझाया।
2. तुम तुम्हारा काम करो।

उत्तर :

1. मैंने तुझे बहुत समझाया।
2. तुम अपना काम करो।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. प्राणांत होना
2. जान हथेली पर लेकर चलना

उत्तर :

1. **प्राणांत होना**
   अर्थ– मृत्यु होना
   व्याख्या– मोहन ने प्राणांत तक परिवार के लिए खूब परिश्रम किया।
2. **जान हथेली पर लेकर चलना**
   अर्थ– मृत्यु से न डरना
   व्याख्या– वीर सैनिक जान हथेली पर लेकर आगे बढ़ते हैं।

14. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

इस लोकोक्ति का अर्थ है– एक व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि–किंकिनि में धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बन–माल सुहाई।।
माथे किरीट, बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुख चंद जुन्हाई।
जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्रीब्रज–दूलह देव–सहाई।।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश रीतिकाल के प्रमुख कवि देव द्वारा रचित है। इसमें कवि ने श्रीकृष्ण के राजसी शृंगार से मण्डित रूप–सौंदर्य और वेशभूषा का मनमोहक चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या– कविदेव श्रीकृष्ण के रूप–सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि श्रीकृष्ण के पैरों में सुन्दर नूपुर हैं,जो बजते हुए मधुर ध्वनि कर रहे हैं। उनकी कमर में करधनी शोभायमान हो रही है, जिसकी ध्वनि अत्यधिक मधुर है। श्रीकृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र अत्यधिक शोभा बढा रहा है। तथा उनके वक्षस्थल पर जंगली फूलों की विशेष प्रकार से गूँथी गई माला अत्यधिक शोभित हो रही है। उनके मस्तक पर मुकुट विराजमान है, उनके नेत्र बड़े और चंचल हैं तथा उनके मुख रूपी चन्द्रमा पर मधुर मुस्कान रूपी चाँदनी सुशोभित है। ऐसे सजे–धजे ब्रज के दूल्हे श्रीकृष्ण आज विश्व रूपी मन्दिर के सुन्दर प्रज्वलित दीपक के समान शोभाशाली दिखाई दे रहे हैं। उनकी जय हो, वे अपने इसी रूप में सदैव बने रहें तथा कवि देव की यह कामना है कि वे सुन्दर ब्रज दूल्हे श्रीकृष्ण सदा सबके सहायक बने रहें, सब पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें।

विशेष–

1. यह सवैया श्रीकृष्ण के राजसी शृंगार से सुसज्जित रूप–सौंदर्य पर आधारित है। इसमें श्रीकृष्ण को ब्रज–दूल्हा बताकर उनके रूप को विशिष्ट चित्रित किया है।
2. यह सवैया मंगलाचरण की तरह रचा गया है।
3. अनुप्रास, उपमा और काव्यलिंग अलंकार है। सवैया छन्द और ब्रजभाषा का प्रयोग अत्यधिक सुन्दर है।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

धार में धाय धँसी निरधार ह्वै, जाय फँसी, उकसीं न अबेरी।
री अंगराय गिरीं गहरी, गहि, फेरे फिरीं और घिरी नहीं घेरी।।
देव कछू अपनो बस ना, रस–लालच लाल चितै भयीं चेरी।
बेगि ही बूड़ि गयी पँखियाँ, अखियाँ मधु की मखियाँ भयीं मेरी।।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत पंद्याश महाकवि देव द्वारा रचित काव्यांश से लिया गया है। इसमें कोई गोपी श्रीकृष्ण की रूप–माधुरी के प्रति अत्यधिक आसक्त होकर अपनी सखी से अपनी विवशता बतलाती है।

व्याख्या– कवि देव के वर्णनानुसार कोई गोपी कहती है कि हे सखी! मेरी आँखें श्रीकृष्ण की सौंदर्य छवि की धारा में बिना किसी सहारे के दौड़कर धँस गई हैं और उसमें ऐसी फँस गई हैं कि निकलने का प्रयत्न करने पर भी वहाँ से निकल नहीं पा रही हैं। अब तो ये साँवले रंग के प्रेम–रस में अत्यधिक डूब गई हैं। अरी सखी! ये मेरी आँखें अंगड़ाई लेकर इतनी गहरी जा गिरी हैं कि पकड़कर फेरने पर भी ये वहाँ से नहीं लौट रहीं हैं अर्थात् श्रीकृष्ण की रूपी–माधुरी से वापिस नहीं आ पा रही हैं। मैंने इन्हें घेरकर पकड़ने का काफी प्रयत्न किया, परन्तु ये घेरने पर भी नहीं घिर सकी हैं। महाकवि देव वर्णन कहते हैं कि रूपासक्त वह गोपी या नायिका कहने लगी कि अब तो इन आँखों पर मेरा कोई वश नहीं है। ये आँखें तो श्रीकृष्ण के रूप–रस की लालची बनी हुई हैं और उन्हें देखते ही ये उनकी दासी बन जाती हैं। ये मेरी आँखें तो मधुमक्खियाँ बन गई हैं। जिस प्रकार मधुमक्खी के पंख जब शहद में डूब जाते हैं, तो फिर उनका उससे निकल पाना अत्यधिक कठिन हो जाता है, उसी प्रकार मेरी आँखें भी श्रीकृष्ण की रूप–माधुरी में पूरी तरह डूब गई हैं और अब अत्यंत प्रयत्न करने पर भी वहाँ से निकल नहीं पा रही हैं।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

विशेष–

1. नायिका या गोपी अपनी आँखों की विवशता बतलाती हैं। इससे उसकी प्रेम युक्त भावना व्यक्त हुई है।
2. श्रृंगार रस में रूप–वर्णन के द्वारा प्रेम भाव के आकर्षण का वर्णन स्वाभाविक रूप में किया गया है।
3. अनुप्रास, यमक, उपमा और रूपक अलंकारों का प्रयोग हुआ है। मत्तगयन्द सवैया छन्द तथा ब्रजभाषा का सुंदर द्रष्टव्य है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन–सी भाषा बोलती थीं? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी? भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के हैं, उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित स्त्री–शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन पाठ से उद्‌धृत है। द्विवेदी जी के समय अनेक पौराणिक विचारों वाले लोग स्त्रियों को पढ़ाने–लिखाने के पक्ष में नहीं थे। उनके तर्क निराधार होते थे परन्तु वे अपनी बातों के पक्ष में कुछ बातें कहते थे। उनका कहना था कि प्राचीन भारत में स्त्रियाँ पढ़ी–लिखी नहीं होती थीं। संस्कृत नाटकों के स्त्री पात्र प्राकृत में बोलते थे। प्राकृत अपढ़ों की भाषा थी।

व्याख्या– प्राकृत को अपढ़ों की भाषा बताना अज्ञानता है। नाटकों में स्त्री पात्र प्राकृत बोलते थे, क्योंकि वे पढ़े–लिखे नहीं थे। द्विवेदी जी ने इसको कुतर्क माना है और कहा है कि नाटकों में स्त्रियों के प्राकृत बोलने से यह सिद्ध नहीं होता कि उस समय स्त्रियाँ अपढ़ होती थीं। प्राकृत बोलने वाले अशिक्षित नहीं थे। इससे इतना ही पता चलता है कि प्राचीनकाल में जो संस्कृत नहीं बोल पाते थे, वे प्राकृत बोलते थे। प्राकृत जनता में सबसे अधिक लोकप्रिय थी। अतः स्त्रियाँ संस्कृत न बोल पाने की स्थिति में प्राकृत बोलती थीं। संस्कृत न बोल पाने से यह सिद्ध नहीं होता कि वे गँवार थीं। लेखक पूछते हैं कि उत्तररामचरित में ऋषियों की पत्नियाँ, जिन्हें वेदान्त का ज्ञान है वे कौन–सी भाषा बोलती थीं। निःसन्देह वे संस्कृत बोलती थीं और उनकी संस्कृत गँवारों की भाषा नहीं थी। इस बात का कोई सबूत नहीं मिलता कि कालिदास और भवभूति आदि के नाटकों के समय में सभी पढ़े–लिखे लोग संस्कृत ही बोलते थे। कुछ लोग संस्कृत तो अधिकतर लोग प्राकृत बोलते थे। लेखक चुनौती देते हैं कि पहले यह बात सिद्ध हो जाए तभी प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ माना जा सकता है।

विशेष–

1. लेखक की भाषा तत्सम शब्दावली वाली, विषयानुरुप तथा सुबोध है।
2. विवेचनात्मक तथा वार्तालाप शैली का प्रयोग किया है।
3. लेखक का कहना है कि प्राकृत बोलना अनपढ़ होने को प्रमाण नहीं है।
4. प्राकृत जनता की भाषा थी। कुछ लोग ही संस्कृत बोलते थे। अधिकतर लोग प्राकृत बोलते थे। प्राकृत बोलने वाले अशिक्षित नहीं थे।

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

इसका क्या सबूत कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं। प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रंथ उसमें क्यों लिखे जाते और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों उपदेश देते? बौद्धों के त्रिपिटक ग्रंथ की रचना प्राकृत में किए जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं। जिन पंडितों ने **गाथा–सप्तशती, सेतुबंध–महाकाव्य** और **कुमारपाल चरित** आदि ग्रंथ प्राकृत में बनाए हैं, वे यदि अपढ़ और गँवार थे तो हिन्दी के प्रसिद्ध से भी प्रसिद्ध अखबार का सम्पादक इस जमाने में अपढ़ और गँवार कहा जा सकता है, क्योंकि वह अपने जमाने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्यपुस्तक में लेखक आचार्य महावीर प्रसद द्विवेदी द्वारा रचित **स्त्री–शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन** पाठ से लिया गया है। प्राचीन काल में संस्कृत बहुत कम लोग ही बोलते थे। अधिकांश लोग प्राकृत भाषा का ही प्रयोग करते थे। प्राकृत लोकप्रिय जनभाषा थी। वह गँवार भाषा न थी और न प्राकृत बोलने वाले अशिक्षित थे।

व्याख्या– लेखक द्विवेदी जी कहते हैं कि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि उस समय प्राकृत जनता की बोलचाल की भाषा नहीं थी। उस समय प्राकृत ही प्रचलित थी। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। यदि प्राकृत का प्रचलन जन सामान्य में न होता तो प्राकृत में अनेक ग्रंथ नहीं लिखे जाते। गौतम बुद्ध भी बौद्ध धर्म के उपदेश प्राकृत में नहीं देते। बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रंथ प्राकृत में इसलिए लिखे गए क्योंकि प्राकृत लोक प्रचलित भाषा थी। बौद्धों के **त्रिपिटक** नामक ग्रन्थ की रचना प्राकृत में इसलिए हुई थी कि सभी लोग प्राकृत बोलते थे। अतः प्राकृत बोलने और पढ़ने को अशिक्षित होने का प्रमाण नहीं माना जा सकता। यदि यह माना जाए कि **गाथा सप्तशती, सेतुबंध महाकाव्य** तथा **कुमारपाल चरित** आदि पुस्तकों के रचयिता अपढ़ थे तो हिन्दी के सबसे अधिक प्रसिद्ध अखबार के सम्पादक को भी अपढ़ ही मानना पड़ेगा क्योंकि वह भी अपने समय की प्रचलित भाषाओं में ही समाचार लिखता है।

विशेष–

1. भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहपूर्ण है।
2. विचारात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
3. द्विवेदी जी ने प्राकृत के जनता में प्रचलित होने का उल्लेख किया है।
4. प्राकृत को जनभाषा माना गया है तथा उसको अशिक्षितों और गँवारों की भाषा बताने का विरोध किया गया है।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएेंगे।

17. संकलित अंश के आधार पर वाणी के महत्व को स्पष्ट कीजिए। 6

उत्तर :

मनुष्य की वाणी की यह विशेषता है कि वह पराये मनुष्य को अपना बना लेती है, अतः वाणी से सदैव मधुर, शीतल वचन बोलने चाहिए। मीठे वचनों से आपस में प्रेम-भाव उत्पन्न होते हैं तथा मीठे वचनों को सुनकर मन उल्लास पूर्ण होता है। जैसे- कोयल मीठा बोलती है, अतः सभी उसकी वाणी सुनकर आनन्दमय होते हैं, दूसरी तरफ कौआ है, जो कड़वा (कर्कश) बोलता है। इसलिए किसी को भी अच्छा नहीं लगता और उसकी आवाज सुनकर लोग उसे भगा देते हैं।

व्यक्ति को पहले सोच-समझकर अवसर के अनुसार हितकारी बात ही मुँह से बोलनी चाहिए। जो बात अवसर के अनुकूल नहीं होती, वह सुनने वालों को अच्छी नहीं लगती। मनुष्य को कभी कड़वा नहीं बोलना चाहिए। कहा जाता है कि शरीर पर तलवारों से हुए घाव भर जाते हैं, लेकिन वाणी से कहे गए कटु वचनों के घाव अनेक उपचार और औषधि करने पर भी कभी नहीं भरते। वे सदा बढ़ते रहते हैं। तुलसीदास जी ने भी वाणी का महत्व बताते हुए कहा है कि मीठे वचन औषधि के समान तथा कड़वे वचन तीक्ष्ण तीरों जैसे चुभते हैं और सारे शरीर को कष्ट देते हैं-

मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन हैं तीर।
स्त्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर।।

अथवा

17. कृपाराम खिड़िया कृत सोरठों में कवि की विद्वता, बहुज्ञता एवं अनुभव की व्यापकता प्रकट होती है। संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 6

उत्तर :

कृपाराम खिड़िया चारण जाति के होते हुए भी विद्वान और अनुभवी व्यक्ति थे। उनकी काव्य रचना से प्रभावित होकर ही राजा देवीसिंह ने उसको अपने दरबार में रख लिया था और उसे महाराजपुरा की जागीर प्रदान की थी। देवीसिंह के पुत्र लक्ष्मण सिंह भी कृपाराम के बुद्धिचातुर्य और काव्य-कौशल से प्रभावित थे। उसने उसे लक्ष्मणपुरा गाँव की जागीर पुरस्कार में देकर उसे सम्मानित किया था।

कवि के अनुसार बल, पराक्रम और हिम्मत के बिना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। जो व्यक्ति निर्भीक, साहसी और वीर होते हैं, वे ही पृथ्वी के भरतार बनकर उसके सुखों को ग्रहण करते हैं। जिस व्यक्ति में साहस नहीं है, उसकी स्थिति रद्दी कागज जैसी है। उसे कभी सम्मान प्राप्त नहीं होता। कृपाराम के अनुसार जहाँ कमजोर को बलवान और गरीब को धनवान दबाते हैं- उस अन्धेर नगरी में रहने से अच्छा निर्जन वन में रहना ज्यादा अच्छा है। कृपाराम के अनुसार आपदा से पहले व्यक्ति को उसके बचने के उपाय करने चाहिए। कवि के अनुसार दो विरोधी प्रकृति वाले मनुष्य समान हित में साथ भले ही हो जाएँ, पर अन्त में कमजोर व्यक्ति को हानि उठानी ही पड़ती है। अतः विरोधी प्रकृति वाले मनुष्य की मित्रता कभी निभ नहीं पाती है। जो कार्य कठोरता से सिद्ध नहीं होते, वे कोमलता से हो जाते हैं। विनम्रता से पत्थर दिल इंसान भी पिघल जाते हैं। अनेक प्रयत्न करने के बाद भी व्यक्ति की प्रकृति में परिवर्तन लाना मुश्किल है। सद्संगति की महिमा अपार है।

इस प्रकार संकलित अंश में कृपाराम की विद्वानता, बहुज्ञता, काव्य कौशल और अनुभव की व्यापकता प्रस्तुत होती है।

18. भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है। पाठ के आलोक में इस कथन की व्याख्या कीजिए। 6

उत्तर :

मोहन राकेश द्वारा लिखित यात्रा-वृत्त में कन्याकुमारी के समुद्र-तट तथा आसपास के प्राकृतिक दृश्यों का सुंदर मनोहारी वर्णन किया गया है। भारत में उत्तर दिशा में हिमालय श्रृंखला का प्राकृतिक सौंदर्य फैला हुआ है, तो मध्य भाग में नदियों, हरे-भरे खेतों, घने जंगलों तथा अनेक छोटी-बड़ी पहाड़ियों का सौंदर्य मन को मोहित कर देता है। इसी प्रकार भारत के दक्षिण में रामेश्वरम् एवं कन्याकुमारी आदि स्थान प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण हुए हैं। कन्याकुमारी में तीनों ओर से समुद्र की उत्ताल लहरों का मिलन होता है। वहाँ पर नारियल के झुरमुटों की अधिकता है। कन्याकुमारी के निकट आखिरी चट्टान पर स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी। उस स्थान से सूर्योदय एवं सूर्यास्त का दृश्य अत्यधिक आश्चर्यकारी दिखाई देता है। वहाँ पर उस दृश्य को देखने के लिए हजारों पर्यटक आते हैं। कन्याकुमारी के समुद्र-तट पर रेत के टीले भी अत्यधिक आकर्षक लगते हैं। इस प्रकार वहाँ पर प्रकृति का खूबसूरत उपहार देखने को मिलता है। अतः प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भारत का विशेष महत्व है।

अथवा

18. आखिरी चट्टान के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालिए। 6

उत्तर :

लेखक ने अपने इस यात्रावृत्त का शीर्षक **आखिरी चट्टान** रखा है, जो सर्वथा सार्थक है। यात्रावृत्त का समस्त कथानक अपने शीर्षक के आसपास ही घूमता हुआ दिखाई देता है। शीर्षक अपने आप में संक्षिप्त रोचक और स्थिति को व्यक्त करने वाला है। लेखक ने कन्याकुमारी और उसके समीपवर्ती सागर-तट के अद्भुत सौंदर्य का अत्यन्त सजीव, मार्मिक व कलात्मक वर्णित किया है। वह समुद्र के अन्दर से उभरी स्याह चट्टानों में एक पर खड़ा होकर देर तक भारत के स्थल भाग की अंतिम चट्टान को देखता है। इस चट्टान की पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मन्दिर की लाल और सफेद लकीरें चमक रही हैं। यह आखिरी चट्टान अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी इन तीनों के संगम-स्थल पर शोभायमान है। इसी चट्टान पर स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी। वह चट्टान हर तरफ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधि-स्थल जैसी लग रही है। वहाँ का वातावरण शान्त और सागर की लहरों से उद्वेलित है। यह भारतभूमि की आखिरी चट्टान स्थल रूप में शोभायमान है। इस कारण इस यात्रावृत्त का शीर्षक लेखक ने **आखिरी चट्टान** रखा है।

19. लक्ष्मण-परशुराम संवाद प्रसंग के आधार पर परशुराम के चरित्र की किन्हीं दो विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 2

उत्तर :

परशुराम जी अत्यन्त वीर, पराक्रमी साहसी और शक्ति-सम्पन्न थे, किन्तु उनमें विनम्रता का अभाव था। इसी कारण उनकी वीरता केवल

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

मुँहजोरी और प्रलाप बनकर रह जाती है। फलस्वरूप वे हँसी के पात्र बनते हैं।

20. विनम्र और कोमल स्वभाव वाला व्यक्ति सहज ही दूसरों के मध्य अपनी पहचान बना लेता है। संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

विनम्रता से व्यक्ति सरलता से समाज में अपना स्थान बनाने में सफल हो जाता है। जो कार्य कठोरता या शक्ति से नहीं होते, वे कोमलता से सिद्ध हो जाते हैं। संकलित अंश में कवि का कथन है– हथौड़े और कुदालों से चाहे जितनी चोटें करो पर पहाड़ नहीं भिदता, परन्तु जब कोई पेड़ या पौधा उगने वाला होता है तो उसकी कोमल जड़ भी उसको भेद देती है और दरार बनाकर बाहर निकल आती है। जो कार्य शक्ति या कठोरता से सिद्ध नहीं होते, वे कोमलता या विनम्रता से सरलता से हो जाते हैं।

21. उषा की लाली कविता का शिल्प–सौंदर्य लिखिए। 2

उत्तर :

उषा की लाली एक लघु कविता है, जो मुक्त–छन्द में लिखी गई है। इसकी भाषा सहज, सरल, तत्सम शब्द प्रधान है। इसमें ठेठ देशज उपादानों का प्रयोग हुआ है। प्रकृति का मानवीकरण देखते ही बनता है। इसमें लयात्मकता है, संक्षिप्तता, मधुरता, गेयता और सरसता इसकी विशेषताएँ हैं।

22. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए क्या–क्या तर्क दिये? 2

उत्तर :

हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करते हुए ये तर्क दिये–

1. इससे मंजीरे का भी काम ले सकते हैं,
2. आँधी–तूफान में इसका कुछ नहीं बिगड़ सकता,
3. हाथ में लेने पर फकीरों का चिमटा हो जाएगा,
4. यह आग निकालने और रोटी सेंकने के काम आता है,
5. कन्धे पर रख लो तो चिमटा बन्दूक हो जाएगा,
6. यह खंजरी का पेट फाड़ सकता है, इसके सामने मिट्टी के खिलौने नहीं टिक सकते।
7. लोहे का होने से यह मजबूत भी है और वर्षों तक रह सकता है,

23. मन बहुत बैचेन था .... लग रहा था कि वहाँ से तुरन्त लौट जाना पड़ेगा। स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

लेखक कन्याकुमारी में केप होटल के लॉन में बैठा हुआ हिन्द महासागर की लहरों को निहार रहा था। वह सोच रहा था कि वहाँ के रमणीय वातावरण एवं प्राकृतिक परिवेश को देखने के लिए कई सप्ताह वहीं पर रहूँ, परन्तु अपने भुलक्कड़ स्वभाव के कारण वह कनानोर के होटल में अपने लिखे अस्सी–नब्बे पन्ने मेज की दराज में छोड़ आया था। इसलिए लेखक तुरन्त कनानोर जाना चाहता था। इसलिए वह बहुत बेचैन था। कागजों के सुरक्षित मिल जाने की आशा कर रहा था। इसलिए तुरंत वहाँ से लौटने की सोच रहा था।

24. एकै मारग तें सब आया इत्यादि कथन से सन्त पीपा ने क्या संदेश व्यक्त किया? 2

उत्तर :

इस कथन से संत पीपा ने यह संदेश दिया कि सब मानव एक ही ईश्वर की संतान हैं। सभी जीव ईश्वर के सामने समान हैं और सभी का संसार में आगमन एक ही विधि से हुआ है और सभी का जाना भी एक ही मार्ग से तय होता है। समाज में कोई छोटा या बड़ा नहीं है, कोई ब्राह्मण या कोई शूद्र नहीं है। समाज में सब एक समान हैं और आपसी भेदभाव मानना गलत है। सामाजिक जीवन में जाति–वर्ण का भेदभाव मानने वाला अज्ञानी हैं। ऐसा व्यक्ति परमात्मा के वास्तविक स्वरूप से परिचित नहीं रहता है।

25. कवि ने किस प्रकार के नगर की अपेक्षा निर्जन वन में रहना अच्छा बताया है? 1

उत्तर :

कवि के अनुसार जिस नगर में गुण–अवगुण को न कोई देखता है, न समझता है, जहाँ मत्स्य न्याय चलता हैं, कमजोर पर बलवान और गरीब पर धनवान अपना जोर चलातें हैं, जहाँ गुण–दोष की जाँच न करके खली और गुड़ की एक ही कीमत समझी जाती है और दोनों एक ही भाव बिकते हैं, जहाँ भेड़–बकरी सभी को एक ही लाठी से हाँका जाए, ऐसी अन्धेर नगरी में रहने से अच्छा निर्जन वन में रहना अच्छा है।

26. जन्मजात प्रवृत्तियों में बदलाव असंभव है। संकलित अंश के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

कवि के इस कथन का अर्थ है कि जैसे कोयल और कौआ रंग में एक समान हैं, लेकिन उन दोनों की प्रवृत्ति भिन्न है। कोयल मीठा बोलती है तथा कौआ कड़वा बोलता है। वैसे ही दूध तथा (नीर) की स्वाभाविक प्रवृत्ति समान होती है, वे दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। लेकिन चूहा और बिल्ली की जन्मजात प्रवृत्तियों में परिवर्तन संभव नहीं है। चूहा तथा बिल्ली में जन्मगत दुश्मनी होती है। बिल्ली की इस जन्मजात प्रवृत्ति को परिवर्तित करना असंभव है। दुष्ट अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ सकते हैं, चाहे उनके साथ कैसा भी व्यवहार कर लें।

27. कन्याकुमारी में किन तीन सागरों का संगम होता है? 1

उत्तर :

कन्याकुमारी में अरब सागर, बंगाल की खाड़ी तथा हिन्द महासागर का संगम होता है।

28. नीत्से ने ईर्ष्यालु व्यक्ति को क्या कहकर उनकी उपेक्षा की है? 1

उत्तर :

नीत्से ने ईर्ष्यालु व्यक्ति को बाजार की मक्खियाँ बताया है, जो बिना किसी कारण हमारे चारों ओर भिनभिनाया करती हैं।

29. कवि कृपाराम खिड़िया का साहित्यिक परिचय संक्षेप में लिखिए। 4

उत्तर :

कवि कृपाराम **खिड़िया** शाखा के चारण थे। राजस्थान के चारण कवियों में इनका अग्रणी स्थान माना जाता है। ये सीकर–नरेश के आश्रय में रहे। इनकी विद्वत्ता तथा प्रतिभा से प्रभावित होकर दो गाँवों की जागीर भी उपहार के रूप में भेंट दी थी। कवि कृपाराम के **राजिया रा सोरठा** के

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाएंगे।

अतिरिक्त **चाल कनेसी** (नाटक) तथा एक अलंकार–ग्रन्थ के नाम भी गिनाये जाते हैं, परन्तु वर्तमान में **राजिया रा सोरठा** काव्य ही उपलब्ध है। इस काव्य को राजस्थानी भाषा का सम्बोधनात्मक प्रथम नीति काव्य माना जाता है। इसमें कवि ने अपने विश्वस्त व सेवाभावी सेवक राजाराम को राजिया नाम से सम्बोधित कर प्रेरणादायी सन्देशात्मक भावों की अभिव्यक्ति की है।

चारण कवि कृपाराम खिड़िया द्वारा रचित सोरठों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का अनुभव व्यक्त हुआ है। कवि ने अपनी बहुज्ञता के आधार पर एक ओर आदर्श समाज में गुणों के महत्व को उजागर किया है तो दूसरी ओर सामाजिक संगठन, एकता, मित्रता, सत्संगति आदि का सन्देश भी व्यक्त किया है। इस प्रकार राजिया रा सोरठा काव्य में सरल–सरस एवं प्रसादमयी भाषा में भावों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। इससे कवि कृपाराम के साहित्यिक व्यक्तित्व का स्वतः परिचय मिल जाता है।

30. मोहन राकेश के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

नयी कहानी आंदोलन के अग्रणी कथाकार मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 में अमृतसर में तथा निधन सन् 1972 में दिल्ली में हुआ। पहले लाहौर से फिर पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर ये अध्यापन कार्य से जुड़े रहे। कुछ वर्षों तक कहानी की प्रसिद्ध पत्रिका **सारिका** का सम्पादन किया। मोहन राकेश चहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने भारतीय और पश्चिमी नाट्य–शैली को जोड़कर हिन्दी में एक नयी शैली का सूत्रपात किया। **आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस** तथा **आधे अधूरे** इनके विख्यात नाटक हैं।

कथाकार के रूप में मोहन राकेश का नाम स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद के नए लेखकों में अग्रणी है। इन्होंने कहानी–विधा को नया रूप देने का विशेष प्रयास किया। **अंधेरे बन्द कमरे, अन्तराल** तथा **न आने वाला कल** आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं, तो **इंसान के खण्डहर, नये बादल, एक और जिन्दगी, फौलाद का आकाश** तथा **जानवर और जानवर** आदि इनके कहानी–संग्रह हैं। इन्होंने **परिवेश** और **बकलम** खुद शीर्षक–कृतियों में अपनी आलोचनात्मक क्षमता प्रस्तुत की है, तो **आखिरी चट्टान तक** यात्रा–वृत्तान्त से अपने अनुभवों के संस्मरण उपस्थित किये हैं। कम जीवन–काल पाकर भी मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को यशस्वी बनाया। इन्हें संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कार सम्मान प्राप्त हुआ।

□□□□□□□

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।